शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# कवि हर महेंद्र सिंह बेदीके काव्य में मानवीय अनुभूति

हरिराम (शोधार्थी)
ओपीजेएस विश्वविद्यालय
चूरु, राजस्थान, भारत

## शोध संक्षेप

*कविता पीड़ित मनुष्यता को स्वर प्रदान करती है। इसमें हित का भाव निहित रहता है। व्यक्ति की अंत:चेतना अपने बाह्य परिवेश से एकाकार होकर साहित्य रचती है। विसंगतियों को उजागर करते हुए नए युग के प्रवेश द्वार को खोलती है। वह शांतिमय क्रान्ति की अग्रदूत की भूमिका का निर्वाह करती है डॉ.हर महेंद्र सिंह बेदी की कवितायें मानवीय अनुभूतियों से युक्त हैं उन्होंने आम आदमी की आकुलता और विवशता को गहराई से समझा है और उन्हें अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके काव्य संग्रह 'गर्म लोहा' में अभिव्यक्त मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषण किया गया है।*

## भूमिका

पंजाबी शख्सियत डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी लगभग चार दशकों से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त उनका काव्य संग्रह 'गर्म लोहा' (1982) क्रांति के स्वर के साथ हर नवयुवक को प्रतिक्षण सशक्त व नई दिशा प्रदान करता है। उनकी अधिकांश कविताएँ वर्तमान संदर्भ में विसंगति को उजागर करती हैं। उन्होंने आम आदमी की की पीड़ा और संवेदना को जाना और परखा है। कवि भारत की ग्रामीण सभ्यता पर आये संकट की ओर इंगित करते हैं। शहरीकरण के एकाकीपन में आम आदमी की पीड़ा को स्वर प्रदान करते हैं।

हुकुमचंद राजपाल अपने आलेख 'पंजाब की समकालीन हिन्दी कविता के चर्चित कवि' में लिखते हैं -"प्रथम पाठ में प्रथम संग्रह की कुछ कविताएँ हमें सपाट प्रतीत हो सकती हैं, पर दूसरे पाठ में ये रचनाएँ अपना मर्म स्पष्ट करती हैं। उनकी अधिकांश कविताएँ वर्तमान संदर्भ में विसंगति को उजागर करती हैं। आम आदमी की आकुलता और विवशता को आपने निकट से समझा है। वास्तव में बेदी जी वर्तमान परिवेश की भयावह घटनाओं से नया मार्ग तलाशने और सामाजिक चेतना की हुंकार भरते हैं। अतः सच्चे अर्थों में डॉ. बेदी कृत गर्म लोहा क्राँति के स्वर में सामाजिक चेतना का वाहक है।"

## 'गर्म लोहा' में मानवीय अनुभूतियाँ

'गर्म लोहा' काव्य संग्रह की पहली कविता में वे लिखते हैं -

उनकी दुखती रगों पर
रख सकते हो तो रख दो/
गर्म लोहा /गर्म लोहा पिघल कर
फौलाद भी बन सकता है
गर्म लोहा/ गर्म लोहा।।

यहाँ कवि लघु मानव को सामाजिक स्तर पर स्थापित ही नहीं करते बल्कि उसे सशक्त व मजबूत करते हुए विषमताओं से जूझने का संदेश देते हैं। वे प्रारंभ में कहते हैं 'ठंडे लोहे से कुछ नहीं होगा'। यहाँ ठंडे लोहे का तात्पर्य शोषण से घिरे हुए आम आदमी से है।

'सन्नाटे की दहशत' कविता में कवि ग्राम्य प्रधानता के धनी भारतवर्ष की लुप्त हो रही ग्राम सभ्यता पर चिंता और बढ़ते शहरीकरण में एकाकी भाव की शून्यता का स्पर्श कर आम आदमी की पीड़ा को भली-भाँति समझा है और उस आम आदमी को इस घनीभूत सामाजिकता से सरोकार कराते हुए एकाकीपन रुपी सन्नाटे को दूर करने हेतु प्रतिबद्ध खड़ा है।

मैं समझौता नहीं करूँगा/ बेशक आदमी निहत्था है
मौत है /सन्नाटा है / मैं लड़ूँगा/ सागर से / तूफान से /
जहाजों के लौट आने तक ।।

'सीढियाँ' कविता में बदलते परिवेश के साथ-साथ हर आम आदमी को भी बदलने का उसी परिवेश में ढल जाने का संदेश दे रहा है -

गहरे उतरने के लिए / बदलते मौसम में / तुम ढूंढ़ते हो सीढियाँ /
और चाहते हो खुलेआम / एक हंगामा।।

अतः कभी अपने मन मानस में आम आदमी से साक्षात्कार करते हुए कहता है - ढूँढ़ता हूँ / अपने भीतर / एक ही सवाल का जवाब।। कवि ने आजादी के विभाजन के दर्द को अपने पिता से भलीभाँति सुना और समझा। इसी पीड़ा को अपने घर से अपने आसपास के परिवेश को जूझते हुए देखा, उबरते हुए देखा। अतः इसी पीड़ा की व्यथा 'इतिहास से क्राँति' तक कविता में अपने परिवेश अपने शहर अमृतसर के बदलते समय और प्रतीकों को उकेरते हुए लिखते हैं - 'धूप तब भी / जख्मी हुई थी / और हवा ने कसम खाई थी / पहाड़ों से टकराने की।।

यहाँ आजादी के बाद हुए विभाजन का दर्द साफ-साफ महसूस किया जा सकता है। वहीं 'पहचान के पुल' कविता में कवि ने विभाजन के समय की त्रासदी को बहुत पीछे छोड़ कर पहचान मिटाने की चेष्टा भी की है और स्वाधीन भारत में नए रिश्ते स्थापित करने का संदेश देते हैं - लिख दूँगा दीवारों पर / मौसम के सब रिश्ते। 'शब्दों के फर्ज' में कवि ने सामाजिक समरसता व समष्टि का महत्व स्थापित करते हुए मानव से मानव के परस्पर मजबूत संबंधों को बाँधने का प्रयास किया है। अतः यह कविता कहीं न कहीं आजादी के विभाजन के समय शिविरों में निर्वासित, बेघर व बिछड़े लोगों के दर्द को महसूस कराती है।

संत्रास और आतंक के अर्थ / भींच लूँगा मुट्ठियों में /
गरजता सागर / तपता रेगिस्तान /ठंडे पत्थर / तुम मेरी आँखों पर /
बाँध देना पट्टियाँ / और मुझे छोड़ देना भीड़ भरे चौराहे पर।।

वहीं 'संदर्भों की पहचान' कविता में लघु मानव के आंतरिक मनःवेदना और बिखरते एहसास को कवि ने समझा है और उसे पहचान दिलाने हेतु स्वयं को समर्पित करते हुए कहते हैं -

समर्पित हो जाता हूँ / आत्मा से देह तक /
बस जीने के लिए / सही शब्दों का रिश्ता आँधी के बाद।।

कविता में बदलते अमृतसर शहर की पृष्ठभूमि को याद करते हुए बदलाव से पूर्व शहर के जनमानस के संघर्ष और विषमता को कवि ने बड़े उदासी भरे भाव से महसूस करते हुए लिखा है -

याद आते हैं बीते दिन /
गुजारे वो जो / कभी होकर उदास।

'जंगल और आदमी' कविता में कवि असुरक्षा की भावना और राजनैतिक लिप्सा में घिरे लोग अपनी जिजीविषा को खामोशी में जी रहे हैं और

उनकी सुरक्षा के मुद्दों पर होती बहस पर तालियाँ पीटते हैं पर कोई हल नहीं निकलता। अतः बहस केवल प्रदर्शन है, दिखावा है। विकास के बावजूद स्त्री का शोषण बदस्तूर जारी है। उसके प्रति चिंता व्यक्त करते हुए लिखते हैं-

हर शहर में / मैंने देखा / उसे तोड़ती पत्थर /
भवनों का निर्माण / मुरम्मत सड़कों की।

यहाँ एक-एक रोड़ी, एक-एक पत्थर उठाकर सड़कों का निर्माण करने वाली नारी, भवनों को बड़ी-बड़ी इमारत के रूप में खड़ा करने वाली नारी, जिसका नाम कहीं नहीं लिखा हुआ है वे चिंतित व दुखी भावों से कहते हैं -

सड़कों पर बड़े-बड़े नाम खुदे हैं / पर उसका नाम कहीं नहीं है /
हर शहर में मैंने देखा / उसे तोड़ती पत्थर।।

बेदी जी ने 'दिशाहीन शहर' कविता में युवाओं की बेरोजगारी का चित्रण किया है। बेरोजगार युवा विद्रोही हो रहा है। वह अपराध की गलियों में भटकने पर मजबूर है। 'शहर और भीड़' कविता में वे लिखते हैं,

कोई कहाँ जाए / शहर में बहुत भीड़ है / जीवित सड़कें
बीमार लोग / सिक्कों की तरह चलते हैं।।

इसी प्रकार 'बीमार पीढी से' कविता में शोषण का शिकार आदमी मरणासन्न हो चुका है। फिर भी कुछ नया करने की इच्छा उसे प्रेरणा प्रदान करती है। लेकिन वह कुछ भी करने में स्वयं को असमर्थ पाता है। कवि उसे सहारा देने का प्रयास करता है। 'भीड़ का दर्द' कविता में कवि अजनबी चेहरों की भटकन व की ओर ध्यान आकर्षित करता है। दुःख से उबरने के लिए उसे नया मौसम, सुखद समय में चले जाने को कहता है,

तुम तब गाना / खूबसूरत जिंदगी का राग / जब गुजर जाएगा / यह बेरंगा मौसम

'सपनों का देश' कविता में कवि ने सपने या काल्पनिक विचारधाराओं का त्याग कर सार्थक जीवन की अभिव्यक्ति राष्ट्र को समर्पित करते हुए कहते हैं अब मेरे भीतर / इन तस्वीरों के रंगों के सिवा / कुछ नहीं बना।

'वक्त की पहचान' कविता में कवि जनमानस को यही संदेश देता है कि अनजान बनकर किया गया फैसला भविष्य को गर्त में ढकेल देता है। इसी प्रकार 'चुप्पी के बाद' कविता चुप्पी का सिलसिला या खामोश रहने की बजाय मौत के भय से आतंकित न होकर जूझने के लिए प्रेरित करता है। दूसरी ओर 'परिवर्तन' कविता में खेतों में लहराते खेत किसानों की खुशियों में अपनी खुशियाँ ढूँढ़ता हुआ कवि किसान खेतिहर मजदूर सभी की खुशी और परिवर्तन से बहुत खुश होता हुआ कहता है -

फिर भी उठा है / मरा हुआ शहर / मेरे लौटने के बाद /
रोशनियाँ झिलमिलाई है / दूधिया होठों के साथ।

'एक नई शुरुआत' कविता में भी सही दिशा का की पहचान व नई शुरुआत करने की प्रेरणा देता हुआ कहता है।

अंधकार के बाद मुक्ति ही मुक्ति
न भय / न बाधा / न मुखौटा कोई

युवा गुलामी को भूलकर नए भारत के निर्माण में सलंग्न हो जाएँ। 'स्वागत की रोशनी' कविता में कवि देश में निमार्णाधीन योजनाओं के पूर्ण होने की प्रतीक्षा करता है। विकास के कारण प्रभावित होने वाले लोगों के प्रति कवि संवेदना प्रकट करता है।

## निष्कर्ष

'गर्म लोहा' काव्य संग्रह की कवितायें आम आदमी के निजी अनुभव को साझा करती हैं और जीवन में अंतर्द्वंद्व से बाहर निकालने का कार्य

करती हैं। उनकी कविता के बारे में कुलपति डॉ रामशरण पांडे लिखते हैं, "डॉ. बेदी जी के व्यक्तित्व का आकलन करना कोई सहज कार्य नहीं है। इसका कारण यह नहीं कि वे असहज हैं, रहस्यमय हैं। वास्तव में वे बड़े सहज और आत्मीय हैं। उनकी आत्मीयता के परिसर में भाँति-भाँति के लोग हैं, वे परम विनम्र हैं। उन्हें न तो अपने पद का गर्व है और न ही योग्यता विद्वत्ता का।"

हिन्दी कवि हेतराम के अनुसार "बेदी जी वास्तव में अपनी गुरुमत विचारधारा, उनका सद्व्यवहार व घनिष्ठ हिंदी प्रेम उन्हें सादगीपूर्ण व्यक्तित्व के धनी आत्मीयता व धैर्य को प्रकट करती है।"

गुरु चरण सिंह ने उनकी कविता का विश्लेषण करते हुए लिखा है, "बेदी जी की कविता का सरोकार आम आदमी है। वे आम आदमी की वर्तमान स्थिति से संतुष्ट नहीं हैं। आमजन को समाज में सम्मानजनक स्थान देने का पक्षधर हैं। बेदी जी शोषण और अन्याय का डटकर विरोध करते हैं। परिवेश में व्याप्त भय, आतंक, असुरक्षा व्यवस्था को अपनी कविताओं में सिर्फ रेखांकित नहीं करते बल्कि जनता को संघर्ष के लिए तैयार करना चाहते हैं। बेदी जी का मानना है कि संघर्ष से ही बदलाव संभव है। कवि समाज में एकता, अखंडता, धर्म निरपेक्षता के पक्षधर हैं। डॉ रुपिका भनौट के अनुसार जब भी साहित्यिक चर्चा अथवा उनकी बातों को सुनने का अवसर मिला है तब-तब आँखों पर पड़े भ्राँति के जाल उतरे हैं और सोच को नई दिशा मिली है।" कवि ने अपने पिता से, अपने परिवार से विभाजन के दर्द को सुना, समझा और प्रताड़ित आम आदमी को गरीबी से जूझते हुए संघर्षशील देखा। अतः बेदी जी ने अपनी कविता में इन्हीं शोषित को आवाज दी है। उन्होंने अपनी कविताओं में राजनीतिक विचारधारा को कभी हावी नहीं होने दिया। आम आदमी के दिलों से जोड़ते हुए और उनका पथ प्रदर्शित करते हुए सदैव उनके कल्याण में खड़े हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ


- *आईने में, डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी कवि व साहित्यकार हर महेंद्र सिंह बेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, द्वारा पारसमणि पत्रिका त्रिवेणी साहित्य अकादमी जालंधर पंजाब अंक मई-जुलाई, 2017*
- *पंजाब की समकालीन हिंदी कविता के चर्चित कवि, डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी हुकुमचंद राजपाल कवि व साहित्यकार हर महेंद्र सिंह बेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, द्वारा पारसमणि पत्रिका त्रिवेणी साहित्य अकादमी जालंधर पंजाब अंक मई-जुलाई2017*
- *डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी व्यक्तित्व : विभास, साहित्यकार राम सजन पांडे, कवि व साहित्यकार हर महेंद्र सिंह बेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, द्वारा पारसमणि पत्रिका त्रिवेणी साहित्य अकादमी जालंधर पंजाब अंक मई-जुलाई, 2017*
- *पंजाब के हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी डॉ कुलविंदर कौर निर्मल पब्लिकेशन दिल्ली*
- *एकांत में शब्द, डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी, आस्था प्रकाशन, जालंधर*
- *मेरा अनुभव संसार, डॉ हर महेंद्र सिंह बेदी कवि व साहित्यकार हर महेंद्र सिंह बेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, द्वारा पारसमणि पत्रिका त्रिवेणी साहित्य अकादमी जालंधर पंजाब अंक मई-जुलाई, 2017*
- *एकांत में शब्द : ईमानदार अनुभूतियों का पारदर्शी संसार, भूमिका द्वारा डॉ रूपीका भनोट कन्या महाविद्यालय जालंधर आस्था प्रकाशन, जालंधर*
- *आत्मीयता व सहजता के कवि: डॉ हर महेन्द्र सिंह बेदी हेत राम (शोधार्थी)*